## Research Papers Published in Peer-Reviewed Journals/ Proceeding & Other

| | | |
|---|---|---|
| | Name of Faculty | Dr. Sarika Rajaram Kamble |
| | Name of Department | Hindi |
| | Academic Year | 2023-24 |

| Sr. No. | Name of Research Papers Book/Edited Book/ Chapter | Name of the Peer Reviewed Journal and Publication | Page No |
|---|---|---|---|
| 1. | ‘ग्लोबल गाँव के देवता’ सांस्कृतिक परिदृश्य | Aayushi International Interdisciplinary Research Journal Peer Reviewed journal Special Issue No.128 ISSN-2349-638x Impact Factor 7.367 | Page No.185 To187 |
| 2. | आर्थिक विपन्नता के परिप्रेक्ष्य में उपन्यास ‘बरखा रचाई’ | B. Aadhar Multidisciplinary International Research Journal, ISSUE NO (CDLXIII) 46, Impact Factor 8.632 (SJIF 2278-9308<br>Aadhar International Publication Aadhar Social Research & Development Training Institute, Amravati | Page No. 277 To 279 |
| 3. | ‘आदिवासी जनजीवन के परिप्रेक्ष्य में ‘ग्लोबल गाँव के देवता’ | Vidyavarta Special Issue 01, Peer Reviewed International Refereed Research Journal 2319-9318<br>Harshawardhan Publication Pvt.Ltd. Limbaganesh,Dist.Beed Maharashtra | Page No.156 To159 |

# Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

Peer Reviewed And Indexed Journal
ISSN 2349-638x
Impact Factor 7.367
Website :- www.aiirjournal.com

## Theme of Special Issue

## Socio-Cultural Context in 21st Century English, Hindi and Marathi Literature

**( Special Issue No.128 )**

## Chief Editor

**Dr. Pramod P. Tandale**

## Executive Editor

**Prof. (Dr.) Trishala Kadam**

## Editors

**Prof. (Dr.) Subhash Jadhav (Marathi)**
**Mr. Sudhakar Indi (Hindi)**
**Mr. Dipak Sarnobat (English)**
**Minaj Naikawadi**

| Sr.No. | Author Name | Research Paper / Article Name | Page No. |
|---|---|---|---|
| 39 | Karishma Amir Jamadar | Literature , Culture and Gender | 119 |

## Hindi Language Papers

| Sr.No. | Author Name | Research Paper / Article Name | Page No. |
|---|---|---|---|
| 40 | डॉ. शोभा माणिक पवार | 21 वी सदी की कहानी साहित्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ | 123 |
| 41 | डॉ.विठ्ठल शंकर नाईक | इक्कीसवी सदी की हिंदी कहानियों में लोक संस्कृति | 126 |
| 42 | डॉ. संगीता ठाकुर | 21 वीं सदी की हिंदी कविता में चित्रित मानव जीवन | 133 |
| 43 | डॉ. कल्पना पाटोळे | इककीसवी सदी के हिंदी उपन्यासों मे सामाजिक एंव सांस्कृतिक परिदृश्य | 137 |
| 44 | डॉ. सुनीता रावसाहेब हुन्नरगी | मनमोहन सहगल के उपन्यासों में चित्रित सांस्कृतिक परिदृश्य | 140 |
| 45 | डॉ. अशोक मोहन मरळे | 21 वीं सदी के हिंदी काव्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य | 145 |
| 46 | श्री. मलगौडा पाटील | इक्कीसवी सदीं के हिंदी काव्य में सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य | 149 |
| 47 | प्रा. मारूफ समशेर मुजावर | इक्कीसवी सदी के हिंदी कथा साहित्य में चित्रित किन्नर विमर्श | 153 |
| 48 | प्रा. डॉ. रगडे परसराम रामजी | इक्कीसवीं सदी की आम्बेड़करवादी हिंदी कविताओं में सामाजिक परिद्रश्य | 157 |
| 49 | डॉ.रमेश शिवाजी बोबडे | इक्कीसवीं सदी के हिंदी नाटकों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य. (सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के नाटको के संदर्भ में ) | 161 |
| 50 | डॉ. अमोल तुकाराम पाटील | 21 वीं सदी के उपन्यासों में परिवर्तित सामाजिक मूल्य | 164 |
| 51 | डॉ. माला कुमारी गुप्ता | कलि-कथा : वाया बाइपास : सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य | 166 |
| 52 | डॉ.सरोज पाटील | निर्मला पुतुल लिखित 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' कविता का सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश | 170 |
| 53 | डॉ.प्रकाश आठवले | 'संघर्ष' में चित्रित सामाजिक संघर्ष | 174 |
| 54 | प्रो. (डॉ.) विजय महादेव गाडे | वेश्या विमर्श की पहल – कोठा नं. 64 | 178 |
| 55 | प्रा.सारिका राजाराम कांबळे | 'ग्लोबल गांव के देवता' : सांस्कृतिक परिदृश्य | 185 |

# 'ग्लोबल गांव के देवता' : सांस्कृतिक परिदृश्य

**प्रा.सारिका राजाराम कांबळे**
श्री. शहाजी छ.महाविद्यालय कोल्हापुर
मेल आयडी- k.sarika9158@gmail.com

---

आदिवासी साहित्य का हम ने आदिवासी विमर्श के अंतर्गत गहराई से अध्ययन किया है और उस पर आज भी उस पर अधिक अध्ययन हो रहा है। विमर्श को लेकर जितनी चर्चा हुई है उतना ही आदिवासी सांस्कृतिक परिवेश भी महत्त्वपुर्ण है। हिंदी साहित्य के अंतर्गत विविध विधा के रूप में आदिवासी चित्रण हुआ है उसमें सांस्कृतिक परिवेश का विवेचन दिखाई देता है। 'ग्लोबल गांव के देवता' उपन्यास में असुर जाति की संस्कृति का परिचय मिलता है। प्रस्तुत उपन्यास के में खान-पान, लोकगीत, विवाह पद्धति आदि का चित्रण आता है।

असुर समाज के अधिकांश परिवारों के पास अपनी खुद की ज्यादा जमीन नहीं होती है जिसमें साल भर के मक्का मिल जाए। वह मजदुरी एवं खान-खदान में काम कर अपना पेट पालते है। जिनके घर में अनाज की कमी होती है उनका पेट जंगल से मिलनेवाले फलों से भरता है। इस संदर्भ में लेखक कहते है-"महुआ, कटहल, कई तरह के कंद और साग, सब पेट भरने के काम आते। एक कस्सा कंदा तो खाने के पहले बहुत ही मेहनत करवाता। पहले उसे लकडी की राख के साथ उबाला जाता। फिर रात भर दोन खेत में उसे छोटे नाले के नीचे रखा जाता, जिससे छोटी-पतली धारा गिरती हो। रात भर धर के नीचे रहने के बाद भी उन कंदों में कस्सापन बचा तो रहता, किन्तु खाने लायक हो जाता।"[1] यहां पर असुर जाति के खान पान में जंगल से मिलने वाले फलों को पेट भरने के लिए उपयोग में लाते है। इसका विवेचन प्रस्तुत उद्धरण से स्पष्ट होता है।

असुर जाति का जीवन भले ही कठीन एवं चुनौती भरा होने के बावजुद भी दिन भर जी तोड मेहनत करने के बाद भी जब कोई त्योहार या पर्व आता तो यह लोग बडे जोश के साथ उसमें शामिल होते है इस संदर्भ में लेखक कहते है-" खदान की मजूरी भी कम देह- तोडनेवाली नहीं थी। इसी श्रम-रस में डूबते-उमडते, सरहुल, हरिअरी, सोहराय, सडसी-कुटासी पर्व-त्योहारों में, अखडा में, जदुरा, झूमर, करम नाचते, अपने बैगा-पूजार-पाहन के साथ सामुदायिक जीवन जीते, वे जिंदगी का घोडा दौडाते रहते।"[2] यहां पर लेखक ने असुर जाति के विविध त्योहारों एवं पर्व का विवेचन किया है।

शनिवार रविवार के दिन सभी लोग हडिया पिणे का मजा लेते है। भांग की तुलना में हडिया का नशा थोडा हलका महसूस रहता है। शनिवार के दिन लेखक हडिया पीकर कटहल-भात खाकर एक साथ मिलकर बैठ जाते है तो लालचन की पत्नी देवर भाभी के गीत गुनगुनाती हुई कहती है –

*" काहे रे देवरा मन तोरा कुम्हले*
*काहे रे मन सुखी गेला रे,*
*भूखे रे देवरा मन तोरा कुम्हले,*
*पियासे मन सुखी गेला रे।"*[3]

यहां पर देवर भाभी के गीत का चित्रण किया है जिससे भाभी अपने देवर के दुखी मन को भापने की कोशिश कर रही है।

असुर समाज में गुरुवार के दिन विशेष बैठक होती है उसे बीफे गुरुवार भी कहा जाता है –"जहां गुरुवार के दिन गांव के सारे बुजुर्ग,समझदार, सयाने बैठते और गांव-घर समाज की समस्या पर बतियाते। उसी अखाडा में पर्व-त्योहार, सरहुल, हरियाली, सोहराय पर रात भर मांदर बजता। रात भर गांव-गांव से जवान लडके जुटते। लडकियां जुटती। झूमर, जदुरा के बोलों पर रात भर चांद नाचता। सखुआ और पलाश नाचता। कणेर और अमलतास नाचता। नदी-झरना पहाड नाचते। एक साथ पुरी प्रकृति नाचती।"[4] यहां पर असुर जाति के नृत्य कला का परिचय मिलता है।

शहर में बांस बेचने जाने वाली लडकियों के लिए नौजवान लडके गीत गाते हुए नजर आते है –

*" काठी बेचे गेके असुरिन,*
*बांस बेचे गेले गे,*
*मेठ संग नजर मिलयले,*

*मुंशी संग लासा लगयले गे,*
*कचिया लोभे कुला डूबाले,*
*रुपया लोभे जात डूबाले गे”*[5]

असुर लडकियां जब कभी लकडी बेचने के लिए बझार जाती है तो कोई मुंशी या लाला उन्हें अपनी बातों में फसाते है, पैसों का लालच दिखाते है लडकियां उनके बह्कावे में आ जाती है और लडकियों के साथ गलत व्यवहार करते है। इस बात को गांव के लडके लडकियों को गीत के माध्यम से समझाना चाहते है।

डॉक्टर साहब असुरों के खान-पान पर चिंता करते हुए कहते है —“ पाट में जो असुरों का रोज का खाना है, उसमें प्रोटीन तो होता ही नहीं हैं। दहलन के नाम पर सरगुज्जी के साठ थोडी बहुत उडद होती थी, जिसकी भतुआ या पके खीरे के साथ बडियां सुखाकर रख ली जातीं। मर-मेहमान के आने पर भात और बडी की रसदार सब्जी बनती। झोर-भात। अन्य दिनों तो सागों के सहारे घट्टा या भात से पेट भरा जाता।”[6] आर्थिक विपन्नता के कारण प्रोटीन युक्त खाना इन लोगों को नहीं मिलता है। इस बात की विवशता डॉ. से पता चलती है। कभी कभी हाटों से मांस या नदी या झरने से मछली यह एक मात्र इन लोगों के प्रोटीन का आधार होता है।

लिव इन टुगेदर का फैंशन आदिवासी समाज से ही आया हुआ है ऐसा लेखक का मानना है। किसी भी व्यक्ति की शादी में कोई कठिनाई आती है तो लडका और लडकी बिना शादी किए साथ में रह सकते है लेकिन उनके बेटा या बेटी की शादी से पहले उन्हें पहले अपनी शादी करनी पडती। इस संदर्भ में लेखक कहते है-“ कभी-कभी एक ही मडवे पर मां-बाप शादी करते हैं बाद में बेटा या बेटी की शादी होती है। आर्थिक कठिनाई से अगर साथ रह रहे हो तो विवाह का खर्च इकटठा होते शादी की रस्म में पूरी कर ली जाती है। इसिलिए यह लिविंग टुगेदर का फैशन यहीं से उतरकर वहां गया है।”[7] यहां पर असुर समाज के विवाह को लेकर नियम तथा रस्म रिवाज का परिचय मिलता है।

असुर समाज में सहिया जोडने की परंपरा को देखा जा सकता हैं। ललिता जब लेखक के साथ सहिया जोडने की बात लालचन दा से कहती है तो वह इस बात पर हसते हुए कहते है-“ लडका-लडका और लडकी से लडकी का सहिया जोडाये तो देखते-सुनते आये। अब ललिता नया विधिविधान, परम्परा शुरू कर रही हैं। लेकिन अच्छा है। सहिया भी चुनी है तो अपने जैसा किताबी किडा। दिन-रात आकाश ताकने वाला।”[8] यहां पर ललिता पहली बार किसी लडके के साथ सहिया जोडना चाहती है तो बाबा को छोडकर किसी की भी कोई आपत्ति नहीं होती है। उसके फैसले में सभी अपनी स्वीकृति देते है। सिर्फ बाबा मौन हो जाते है।

भौजी ऐसे ही सहिया जुडाना पसंद नहीं करती तो उपहार देने की बात बताती है और इतवार को इस रस्म को पूरा करना चाहती है। इस संदर्भ में लेखक लिखते है —“ छोटी —सी रस्म थी। मैंने सलवार सूट का कपडा और एक पेन सेट उपहार में दिया। ललिता एक सुंदर-सी रेडिमेड शर्ट मेरे लिये लायी थी। फिर हमने एक-दूसरे को गुलईची का फूल भेंट किया। अब तो एक-दूसरे को नाम से नहीं फूल कहकर संबोधित करना था।”[9] यहां पर सहिया जोडने की रस्म का चित्रण आता है। इस दिन गांव के लडके-लडकियों ने साथ में खाया पिया और रातभर मांदर की थाप पर नृत्य करते है।

विवेच्य उपन्यास में लेखक ने झूमर नृत्य का वर्णन किया है —“यह झूमर नाच भी क्या था ? अर्धवृत्त्ताकार में झुलकर कुछ कदम आगे बढाना फिर सिर उठाकर पीछे हटना। मानो हरे-भरे धान के खेत में हवा बह रही हो और फसल हवा के संग झुमकर झुक रही हो। मानो बांस का जंगल, तेज हवा के साथ लचक-लचक कर किलोल कर रहा हो। मानो नदियों की लहरें धीमी लय में गिर उठ रही हो। आकाश में पंछी, समूह में उडान भरते घोंसले को वापस जा रहे हों।”[10] यहां पर लेखक ने झूमर नृत्य का वर्णन प्रकृति की मनोहार दृश्य के साथ की है।

विवेच्य उपन्यास में असुर समाज के समस्याओं के साथ —साथ सांस्कृतिक परिदृश्य का चित्रण किया है। जिसके अंतर्गत गीत,रस्म-रिवाज, विवाह पद्धति, पर्व-त्योहार आदि का विवेचन किया हुआ है। लेखक ने यहां पर सांस्कृतिक पक्ष को काफी बखुबी से सजाया है। जिससे असुर समाज की सभ्यता एवं संस्कृति का परिचय मिलता है।

## संदर्भ सूची :-

1. रणेन्द्र , ग्लोबल गांव के देवता, पृ. क्र. 24
2. वहीं पृ. 28
3. वहीं ,पृ. 25,26
4. वहीं ,पृ. 26
5. वहीं, पृ. 38
6. वहीं, पृ. 65
7. वहीं, पृ. 76
8. वहीं, पृ. 77
9. वहीं ,पृ. 77
10. वहीं ,पृ.78

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com

Impact Factor-8.632 (SJIF)
ISSN-2278-9308

# B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

**Multidisciplinary International Research Journal**

March- 2024
ISSUE No - (CDLXIII) 463

## 75th Years of Indian Economy: Achievements and Challenges

JOURNEY OF INDIAN ECONOMY
1947 - 2022
75 Years of Indian Economy
75

**Chief Editor**
**Prof. Virag S. Gawande**
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

**Executive Editor**
**Dr. R. K. Shanediwan**
Principal
Shri Shahaji Chhatrapati
Mahavidyalaya, Kolhapur

**Editor**
**Prof. Dr. Mrs. S. S. Rathod**
Head, Deptt. of Economics,
Shri Shahaji Chhatrapati
Mahavidyalaya, Kolhapur

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com
Aadhar Publications

| | | |
|---|---|---|
| | प्रा. डॉ. संजय शिवाजी ओमासे | |
| 46 | भारतातील मानव संसाधन विकास **सहा.प्रा.सोनाली काशिनाथ गवळी** | 216 |
| 47 | विकास पर्यावरण आणि शाश्वतता **सहा. प्रा. सुषमा युवराज पाटील** | 220 |
| 48 | भारतातील महिला सक्षमीकरण आणि महिला साक्षरता **प्रा. किरण सदाशिव कांबळे** | 225 |
| 49 | अमृतमहोत्सवी भारतीय अर्थव्यवस्था : एक दृष्टीक्षेप !<br>**श्री. चंद्रकांत भूपाल पाटील ,प्राचार्य. डॉ.विजयकुमार पाटील** | 229 |
| 50 | भारतीय अर्थव्यवस्थेसमोरील पर्यावरणीय समस्या **प्रा. वर्षा संदीप पाटील** | 236 |
| 51 | नवीन शैक्षणिक धोरण आणी उच्च शिक्षणाचे आंतरराष्ट्रीयीकरण<br>**डॉ. आर. डी. मांडणीकर** | 241 |
| 52 | सातारा जिल्ह्यातील भूमी उपयोजन कार्यक्षमतेचा अभ्यास<br>**श्री. तेजस चव्हाण ,डॉ. डी. एल. काशिद-पाटील ,श्री. गौरव काटकर** | 246 |
| 53 | भारतीय अर्थव्यवस्थेची सद्यस्थिती आणि आव्हाने डॉ. विजय जालिंदर देठे | 252 |
| 54 | मौजे आगर मधील जाधव पोल्ट्री फार्म : एक आर्थिक चिकित्सक अभ्यास<br>**प्रा.डॉ. प्रभाकर तानाजी माने** | 256 |
| 55 | डॉ.शां.ग.महाजन यांचे ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्र साहित्यातील योगदान<br>**सौ.नीता पाटील** | 261 |
| 56 | उच्च शिक्षणातील सल्लागार, मार्गदर्शक, दीपस्तंभ: प्रा. सुधाकर मानकर सर.<br>**डॉ.पांडुरंग बाळकृष्ण पाटील** | 268 |
| 57 | भारत में खेल विकास के लिए योजनाएँ **Capt. Dr. Prashant Bibhishan Patil** | 271 |
| 58 | आजाद भारत की आर्थिक विषमता और जनवादी कवि 'धूमिल' **प्रो.डॉ.सरोज पाटील** | 273 |
| 59 | आर्थिक विपन्नता के परिप्रेक्ष्य में उपन्यास 'बरखा रचाई'<br>प्रा. डॉ. सारिका राजाराम कांबळे | 277 |
| 60 | भाषा प्रौद्योगिकी : चिंतन और रोजगार **डॉ. अक्षय राजेंद्र भोसले** | 280 |
| 61 | Regional Trend Of Milk Production In Maharashtra State<br>Aishwarya Hingmire<br>**Mayur Goud, Dr. D. L. Kashid -Patil Dr. N. D. Kashid- Patil** | 285 |
| 62 | Micro Study of Demographic Characteristics of<br>Gaganbavda Tehsil in Kolhapur District<br>**Mr. Shubham Tanaji Patil, Dr. D. L. Kashid-Patil** | 290 |
| 63 | Impact Of Marxism On English Literature **Mrs. S. K. Desai** | 299 |
| 64 | Charting the Course: Navigating Challenges and Opportunities in India's<br>Economic Development Landscape **Ms.Komal Suresh Jagtap** | 301 |
| 65 | कोल्हापूर जिल्ह्यातील निवडक शेतीक्षेत्रातील मृदा परीक्षणाचा चिकित्सक अभ्यास<br>**प्रा. गौरव काटकर,डॉ. सौ. एन. डी. काशिद-पाटील,प्रा. तेजस चव्हाण** | 305 |

# आर्थिक विपन्नता के परिप्रेक्ष्य में उपन्यास 'बरखा रचाई'

**प्रा. डॉ. सारिका राजाराम कांबळे**
श्री. षहाजी छ. महाविद्यालय, कोल्हापुर। मेल आयडी–k.sarika9158@gmail.com
मो. नं. 9158548358

---

मूल शब्द :–आर्थिक व्यवस्था, भोशण, गरीबी, मजदूर

प्रस्तावना :–

आज सभी अर्थ में 'पैसा' मनुश्य जीवन का मूलाधार बन गया है। दिन–ब–दिन विज्ञान की प्रगति होती जा रही और नए–नए अविश्कार होते रहे है। इसके साथ–साथ मनुश्य की आवश्यकताएँ भी बढ़ती जा रही है। आज औदयोगिक तथा वैज्ञानिक क्रांति के परिणामस्वरूप मानव जीवन भी दिन–ब–दिन अधिकाधिक व्यस्त होता जा रहा है। स्वाभाविकतः मनुश्य जीवन में भौतिक सुविधा का आधिक्य बढ़ रहा है। आज प्रत्येक व्यक्ति का भौतिक साधनों के प्रति बढ़ता आकर्शण उसकी समस्याओं का एक महत्त्वपूर्ण कारण रहा है। एक ओर मनुश्य की जरूरतें बढ़ रही है तो दूसरी ओर मनुश्य अपना जीवन स्तर पहले से अधिक संपन्न बनाने की होड़ में लगा रहा है। मनुश्य का भौतिक सुविधाओं की ओर बढ़ता आकर्शण है साथ साथ व्यक्ति का दिखावापन भी बढ़ रहा है। डॉ. कपिला पटेल का वक्तव्य बहुत कुछ स्पश्ट करता है–''तीव्रता से होते जा रहे भाहरीकरण ने आज मानव को मानवीय गुणओं से वंचित एवं धर्म स्थानों से हटाकर बड़े–बड़े फाईव स्टार होटलों, डिस्कोथिक्स, बीयर हाऊसेज में लाकर खड़ा का दिया है। गाँवों की बजाय भाहरों तथा महानगरों में जीवन का बनावटीपन अधिक हैं। ये सब सुख–सुविधाएँ कहाँ से उपलब्ध की जा सकती है, कौन व्यक्ति इन सुविधाओं का अधिकाधिक उपयोग कर सकता हैं। यह प्रश्न विचारणीय है। इन सब ऊँचे पैमाने की सुविधाओं का केवल वही व्यक्ति उपयोग कर सकता है, जिसके पास अमाप पैसा हैं।''[1] पैसों के महत्त्व को स्पश्ट करते हुए लेखिका ने भाहर की बनावटी दुनिया का चित्रण किया हैं जो कि वास्तविकता का दर्शन कराता है। इसके साथ ही गांव और भाहर की आर्थिक व्यवस्था पर प्रकाश डाला है।

भारत देश में स्वतंत्रता के पश्चात् भी आज भी ऐसे कई लोग है जो अपनी आर्थिक व्यवस्था के कारण अभावग्रस्त जीवनयापन कर रहे है तो दूसरी ओर चंद लोग ऐशों आराम की जिंदगी गुजार रहा है भारत में दो वर्ग के साथ साथ मध्यवर्ग भी दिखाई देता है जो कि अमीर है और ना ही गरीब है। आर्थिक दृश्टि से अमीरी और गरीबी के बीच पीसता रहा इस देश का मध्यम वर्ग आर्थिक समस्या शिकार होता जा रहा है। यह लोग ना ही गरीबों की भाँति जी सकते हैं, न अमीरों की तरह जीवनयापन कर सकते है। अमीर बनने की चाहत उन्हें गलत काम करने के लिए प्रेरित करती है, जिसके कारण समाज में चोरी, हत्या आदि का बढ़ जाना स्वाभाविक हैं। व्यक्ति पैसे कमाने की लालच में गलत रास्ता अपनाने लग जाते हैं तो दूसरी ओर आर्थिक अभावों के कारण गुनहगारी प्रवृत्ति बढ़ती हुई नजर आती है, खासकर निम्न वर्ग की युवा पीढी में कम समय में अधिक पैसा कमाने के लालच में गुनहगारी प्रवृत्ति बढती दिखाई देती है।

अमीर, मध्यमवर्गीय, गरीब तथा मजदूरों का चित्रण हिंदी साहित्य के विभिन्न साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में विविध माध्यमों के द्वारा प्रस्तुत किया है। ऐसे ही हिंदी के जाने माने उपन्यासकार असगर वजाहत ने अपने उपन्यास के जरिए इनकी स्थिति का यथार्थ पाठकों के सामने लाया है। देश की आजादी के बाद देश के आम लोगों की स्थिति का बयान करने के लिए लेखक 'असगर वजाहत' ने अपने 'बरखा रचाई' उपन्यास में आम लोगों के जीवन संघर्श एवं उनकी आर्थिक व्यवस्था को दर्शाया है।

मजदूरों की स्थिति :–

लेखक पत्रकार साजिद अली के माध्यम से मजदूरों की स्थिति का बयान करते है। वह अपने दोस्त सरयू को लेकर उनकी बस्ती में चले जाते हैं। साजिद अली मजदूरों की स्थिति का वर्णन करते हुए कहते है–''मैं और सरयू बंधुआ मजदूरों के झोंपड़ेनुमा घरों में जाते थे। पूरे घर में जो कुछ भी दिखायी देता था। उस सबको अगर जमा करके बाजार में बेंचा जाये तो कोई दो रूपये को भी नहीं खरीदेगा, यह हमारी पक्की राय बनी थी। कुछ पटाइयां, चीथड़े हुए कपड़े, मिट्टी के बर्तन, मिट्टी का दिया और मुश्किल से एक छीन का कनस्तर ही दिखायी पड़ते थे।''[2] यहाँ पर मजदूर लोगों की आर्थिक स्थिति का चित्रण आता है, जिससे उनकी गरीबी की पीड़ा झलकती है। देश स्वतंत्रता के पश्चात् भी मजदूरों का रहन–सहन, खान–पान आदि सच्चाई को देखा जा सकता है।

इसके साथ ही उपन्यास में पत्रकार साजिद अली खान को मजदूरों की वर्तमान स्थिति पर रिपोर्ट बनाने के लिए मजदूरों की बस्ती में जाना पडता है। उन लोगों की हालात देखकर वह हैरान हो जाते है इस संदर्भ वह अपना मंतव्य व्यक्त करते हुए कहता है –''पूरे झार में जो कुछ भी दिखाई देता था। उस सबको अगर जमा करके बाजार में बेचा जाये तो कोई दो रूपये को भी नहीं खरीदेगा, यह हमारी पक्की राय बनी थी। कुछ चटाइयां, चीथड़े हुए कपड़े, मिट्टी के बर्तन, मिट्टी का दिया और मुश्किल से एक छीन का कनस्तर ही दिखाई पड़ते थे। दूसरी तरफ बड़े–बड़े फॉर्म थे जिनमें पचास हजार एकड़ जमीन थी। दो हजार एकड़ भगवान के नाम...हजार एकड़ कुत्ते के नाम... इसी तरह जमीन पर कब्जा किया गया था।''[3] यहाँ पर मजदूरों तथा अमीरों की तुलना की है एक ओर इनको रहने के लिए ठीक से घर भी नहीं है तो दूसरी ओर अमीर लोगों के कुत्ते भी आराम से जीवन जीते है इस विसंगति को देखा जा सकता है। आर्थिक जीवन से जुड़ी समस्याओं पर भी यह लेखक ने पूरी यथार्थता के साथ अपनी कलम चलाई हैं।

### आदिवासी भोशण :–

'बरखा रचाई' उपन्यास में आर्थिक भोशण के कई उदाहरण मिलते हैं। पत्रकार साजिद अली खान आदिवासियों के आर्थिक भोशण पर रिपोर्ट बनवाते है। वह अपने रिपोर्ट में लिखते है कि–''एक आदिवासी ने किसी तरह सूद समेत अपना सारा कर्जा चुका दिया है। महाजन ने आदिवासी से कहा कि आज तो तुम बड़े खुश होंगे कि सारा कर्जा चुका दिया हैं। उसने कहा हां महाराज बहुत खुश हूँ। साहूकार बोला–तो मुँह मीठा कराओ। वह बोला–महाराज अब मेरे पास एक पैसा नहीं है। साहूकार ने कहा–अच्छा मगर तुम्हारे पास पैसा होता तो कितने पैसे से मुंह मीठा करा देते। उसने कहा–महाराज चार आने से करा देते। साहूकार ने कहा ठीक है...चार आने तुम्हारे नाम खाते में चढाये लेता हूँ।''[4]यहाँ पर साहूकार द्वारा आदिवासियों पर किए जाने वाले आर्थिक भोशण का चित्रण आता है। पूरा कर्जा लौटाने के बावजूद भी उस पर मिठाई देने के बहाने फिर से चार आने का कर्जा चढाया जाता है।

आदिवासियों को बैंक द्वारा कर्ज दिया जाता है। बैंक में आदिवासियों को कर्ज देने के लिए टारगेट तो निश्चित किया जाता है परंतु आदिवासी लोग बैंक के नियमों से अनभिज्ञ है। बैंक मैनजर अपना टारगेट पूरा करके अपनी तरक्की पाने की कोशिश में गाँव–गाँव में जाकर वहाँ के लोगों को कर्जा देते रहते है, उनसे कागजातों पर अँगूठे लगवा लिए जाते हैं। कर्जा बैंक को सूद समेत वापस लौटाना पडता है इस बात से आदिवासी अंजान है। बैंक मैनजर लोगों को कर्जा देकर चले जाते है, तो सारा पैसा भाराब में उड़ा देते है, काफी खर्चा भी करते हैं। अगले साल दूसरा मैनजर कर्ज के किश्त माँगने के लिए आता है तो इन लोगों के पास किश्त को चुकाने के लिए पैसे नहीं होते है तो इन्हें किश्त भरने के लिए दुबारा कर्जा दिया जाता है, इसमें से पहले कर्ज की किश्त काट ली जाती है। यही सिलसिला कई सालों तक चलता रहता है।

### विस्थापन :–

एक जमाना ऐसा था कि आदिवासी लोग अपने इलाके के राजा हुआ करते थे। उनका अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व था लेकिन अब हालात उससे विपरित हो गए है। जंगल काटने, खदानों से बॉक्साइड या अन्य धातु निकालने के चक्कर में इन लोगों की जमीनें हडप ली जा रही है। उनका अपनी परंपरागत अवजार बनाने की कला लोप हो रही है। इनको अपने बस्ती से दूर मेहनत, मजदूरी करने के लिए बाहर जाकर काम करना पड रहा है। इस संदर्भ में लेखक आदिवासियों की व्यथा का बयान करते हुए कहते है–''आदिवासियों की दुनिया अलग है। इतना सहयोग है उस दुनिया में कि आप उसकी कल्पना नहीं कर सकते। उनके ऊपर हमने अपनी दुनिया लाद दी है। छल, कपट, लालच और हिंसा की दुनिया के नीचे ये पिस गये हैं। अब न तो जंगल है जो इनके पेट भरते थे, न नदियों में पानी है जहाँ से इनकी सौ जरूरतें पूरी होती थी। विकास के नाम पर इन्हें हमने लालची और झूठा–मक्कार बना दिया है। भाई ये तो हर तरफ से मारे गये हैं... अब भाहर में जाकर मजदूरी के अलावा क्या चारा है ? एक जमाने के गर्वीले आदिवासी जिन्होंने बड़े–बड़े सम्राटों के साथ युद्ध किये थे आज निरीह, कमजोर और दया के पात्र बन गये है। हमारे लोकतंत्र ने इन्हें यहीं दिया है।''[5] प्रस्तुत उद्धरण से हम आदिवासी की विस्थापन की स्थिति को देख सकते है। लेखक ने उनकी स्थिति का यथार्थ चित्रण अपने उपन्यास के माध्यम से किया है जो कि उनकी मजबूरी, बेबसी, पीडा को दर्शाता है।

साजिद अली खान के दफ्तर में काम करने वाले उनके सहयोगी रावत की आर्थिक विप्पनता का चित्रण आया है। रावत एक निम्न जाति के परिवार का होने के साथ–साथ पहाडी इलाके में रहते है।

उनकी आर्थिक स्थिति ठीक ना होने के बावजूद भी वह काफी कठीनाईयों का सामना करते हुए शिक्षा प्राप्त करने हेतु कई मुश्किलों का डटकर सामना करते है इस संदर्भ में लेखक कहते है–''अब जहां हमारा घर था वहां स्कूल ? कहां ? दूर एक प्राइमरी स्कूल था। घाटी में उतरना पड़ता था और फिर पहाड़ पर चढ़ना पड़ता था। मां रोज मुझे वहां ले जाती थी...घाटी में एक पहाड़ी नदी पार करनी पड़ती थी...वहां से मैंने पांचवीं की थी। हर साल किताब–कॉपी खरीदने के लिए माँ को भेंडे बेचना पड़ते थे।''[6] रावत के घर के हालात ठीक ना होने के बावजूद भी उसे अच्छी शिक्षा मिले इसीलिए माँ को काफी कश्ट उठाने पड़ते है।

बेरोजगारी :–

आधुनिक युग में मानवी जीवन में तेजी से परिवर्तन हो रहा है। लोगों की जीवन शैली भी परिवर्तित हो रही है लेकिन आज का युवा वर्ग बेरोजगारी की समस्या से जुझता हुआ नजर आता है।कई पढे–लिखे लोग बेरोजगारी के कारण निराश और मायूस हो रहे है इसका विवेचन प्रस्तुत उपन्यास में किया गया है। पत्रकार साजिद अली खान भी बरोजगारी की समस्या से जुझते हुए नजर आता है। वह दिल्ली के जेएनयू से एम्.ए. की उपाधि प्राप्त करता है। दिल्ली में डेढ़ साल तक नौकरी की तलाश में रहता हैं लेकिन नौकरी नहीं मिलती इसीलिए वह दिल्ली छोड़कर अपने गाँव जाकर खेती करने का फैसला करता है। गाँव के दोस्तों से वार्तालाप करते हुए कहते बेरोजगारी के बारे में बातचित करते हैं। आर्थिक समस्याओं का सामना करता बेरोजगार युवा वर्ग पढा–लिखा होने के बावजूद व्यवस्था के प्रति उदासिन है। नौकरी न मिलने का दुख इस वर्ग में नैराश्य पैदा कर रहा है। इन समस्याओं से उत्पन्न विवशता, बेबसी युवा वर्ग को नशे का शिकार बना देती है। प्रस्तुत लेखक ने आर्थिक समस्या का चित्रण बडी यथार्थता के साथ किया है। साजिद अली नौकरी न मिलने के कारण खेती करने के गाँव में आते है परंतु खेती करने का तर्जुबा न होने के कारण वहाँ पर मुनाफे के बजाय घाटे का ही सामना करना पडता है।

व्यवस्थागत विसंगति :–

यहाँ पर लेखक ने एक ओर गरीब तथा मजदूरों के रहन–सहन का यथार्थ वर्णन किया है तो एक ओर राजधानी भाहर की स्थिति का सही अर्थ में मूल्यांकन किया है। इस संदर्भ में लेखक पत्रकार साजिद अली खान के माध्यम से कहते है–''हां जानता हूँ ... ये सब अखबार में नहीं लिख सकता... अखबार में ये भी नहीं लिख सकता कि राश्ट्रपति तीन सौ कमरे के पैलेस में क्यों रहता है ? हजारों एकड़ उपजाऊ जमीन पर बड़े–बड़े लॉन और मुगल गार्डेन बनाने की क्या जरूरत है...करोडों लोग लगातार अकाल, बाढ़ और सूखे से मरते है और राजधानी में बारह महीने भाहनाई बजती रहती है।''[7] विवेच्य उद्धरण के माध्यम से लेखक ने राश्ट्रपति महल तथा राजधानी दिल्ली की भाानो शौकत का जिक्र किया है एक ओर इतनी खुशहाली दिखाई देती है उसी देश में करोडों लोग ऐसे भी है जो साल भर में अकाल, बाढ जैसे आपत्तियों का सामना करते है और कई लोग इन आपत्तियों की चपेट में आकर अपनी जान गवा बैठते है। यहाँ पर लेखक ने व्यवस्थागत विसंगति को दर्शाया है।

निश्कर्शतः हम कह सकते है कि आजादी के बाद भी मजदूर आदिवासी एवं मध्यवर्ग की स्थिति में सुधार ज्यादा तौर पर नहीं हुआ है। युवा वर्ग पढ़ा–लिखा होने के बावजूद भी नौकरी न मिलने के कारण निराश हो रहा है। 'बरखा रचाई' उपन्यास के माध्यम से लेखक ने इन लोगों की आर्थिक व्यवस्था तथा आर्थिक समस्याओं क कारण अभावग्रस्त जीवन संघर्श का यथार्थ चित्रण कर पाठकों को उनके बारे में पुनश्चः एक बार सोचने के लिए मजबूर किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1.डॉ. कपिला पटेल , समकालीन हिंदी नाटकों में सामाजिक चेतना, पृ. 122,123
2.असगर वजाहत, बरखा रचाई, 86
3.वहीं, पृ. 86
4.वहीं, पृ. 88
5.वहीं, पृ. 88
6.वहीं, पृ. 63
7.वहीं, पृ. 131

**MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318**

Shri Shahu Chhatrapati Shikshan Sanstha's

# SHRI SHAHAJI CHHATRAPATI MAHAVIDYALAYA

**Accredited by NAAC with Grade 'A' (CGPA-3.13)**
**2968, 'C' Ward, Dasara Chowk, Kolhapur- 4169002 (M.S.)**
**Phone : (0231)-2644204, Fax : 90231)-2641954**
**Affiliated to : Shivaji University, Kolhapur- 416004 (M.S.)**

## ONE DAY INTERDISCIPLINARY NATIONAL SEMINAR

ON

## Sustainable Development in India: Strategies & Emerging Trends in Businesses

**Saturday 16th March 2024**

Organized by

**IQAC & Department of Commerce**

Venue
**MAHARSHI V.R. SHINDE AUDITORIUM**
**Shri Shahaji Chhatrapati Mahavidyalaya, Kolhapur**

**: Cheif Editor :**
**Principal Dr. R.K. Shanediwan**
**Shri Shahaji Chhatrapati Mahavidyalaya, Kolhapur**

**: Editor :**
**Mr. S. H. Kamble**
**(Head, Dept. of Commerce)**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

28) IMPACT OF GREEN INNOVATION ON CORPORATE SUSTAINABILITY
**Dr. Anita Yadav, Kolhapur** || 129

29) Building a Sustainable Future: Responsible Investing Strategies in India
**Shrikant Vasant Bacche, Kolhapur** **||133**

30) साहस पर्यटनाच्या माध्यामातून शाश्वत विकास
**डॉ. सुरेश वसंत शिखरे, कोल्हापूर** **||135**

31) शाश्वत विकास : ध्येये आणि जागतिक परिस्थिती
**डॉ. विजय जालिंदर देठे, दसरा चौक, कोल्हापूर** **||142**

32) एकविसाव्या शतकातील भारताच्या शाश्वत विकासासाठी योगदान
**डॉ. अजितकुमार भिमराव पाटील, कोल्हापूर** **||146**

33) खेल – शाश्वत विकास का एक महत्वपूर्ण प्रवर्तक
**Capt. Dr- Prashant Bibhishan Patil, Kolhapur** **||152**

34) आदिवासी जनजीवन के परिप्रेक्ष्य में 'ग्लोबल गाँव के देवता'
**डॉ. सारिका राजाराम कांबळे, कोल्हापुर** **||155**

35) सामाजिक उत्तरदायित्व से बेखबर कार्पोरेट जगत
**प्रो. डॉ. सरोज पाटील, कोल्हापुर** **||158**

www.vidyawarta.com/03 _ http://www.printingarea.blogspot.com

## 34

# आदिवासी जनजीवन के परिप्रेक्ष्य में ‘ग्लोबल गाँव के देवता’

**डॉ. सारिका राजाराम कांबळे**
श्री. शहाजी छ. महाविद्यालय, कोल्हापुर

* * *

**मूलशब्द** — आर्थिक स्थिति, आदिवासी, अत्याचार, शोषण, व्यवस्थागत विसंगति

**प्रस्तावना —**

भारत देश में स्वतंत्रता के पश्चात् आज भी ऐसे कई लोग है जो अपनी आर्थिक व्यवस्था के कारण अभावग्रस्त जीवनयापन कर रहे है तो दूसरी ओर चंद लोग ऐशों आराम की जिंदगी गुजार रहे है भारत में दो वर्ग के साथ साथ मध्यवर्ग भी दिखाई देता है जो कि अमीर है और ना ही गरीब है। आर्थिक दृष्टि से अमीरी और गरीबी के बीच पीसता रहा इस देश का मध्यम वर्ग आर्थिक समस्या शिकार होता जा रहा है। यह लोग ना ही गरीबों की भाँति जी सकते हैं, न अमीरों की तरह जीवनयापन कर सकते है। अमीर बनने की चाहत उन्हें गलत काम करने के लिए प्रेरित करती है, जिसके कारण समाज में चोरी, हत्या आदि का बढ़ जाना स्वाभाविक हैं। व्यक्ति पैसे कमाने की लालच में गलत रास्ता अपनाने लग जाते हैं तो दूसरी ओर आर्थिक अभावों के कारण गुनहगारी प्रवृत्ति बढ़ती हुई नजर आती है। गाँव तथा आदिवासी लोगों की स्थिति इससे परे नहीं है। आजादी के बाद भी इन लोगों की स्थिति आज भी उसी तरह है जैसे पहले थी। आदिवासी समाज का यथार्थ स्पष्ट करने के लिए लेखक ‘रणेन्द्र’ ने अपने उपन्यास के माध्यम से आदिवासी समाज की समस्याओं को उजागर किया है।

‘ग्लोबल गाँव के देवता’ उपन्यास में लेखक ‘रणेन्द्र’ ने झारखंड में स्थित भौरापाट के असुर समाज का चित्रण किया हैं। जिसमें उनकी लोकसंस्कृति, खान—पान, रस्म—रिवाज, नारी की स्थिति एवं गति, उनकी पीड़ा आदि को देखा जा सकता हैं। इस संदर्भ में अरविंद कुमार उपाध्याय लिखते है—‘‘वैश्वीकरण के दौर में व्यक्ति एक—दूसरे से आगे बढना चाहता है। इस आगे बढने की चाहत ने हजारों लाखों लोगों को जमींदोज तो किया ही साथ ही उनके अस्तित्व पर सबसे बड़ा प्रश्न उभरकर सामने आया है। वैश्वीकरण का तात्पर्य ही यही है कि अगर उसके साथ जो समाज नहीं चल सका, उसे वह मिटा का रख देगा। रणेन्द्र द्वारा लिखित चर्चित उपन्यास ‘ग्लोबल गाँव के देवता’ वैश्वीकरण के प्रभाव को आधार बनाकर लिखा गया हैं।’’[१] प्रस्तुत उपन्यास में भूमंडलीकरण के प्रभाव को आधार बनाकर असुर समाज की वैश्वीकरण के दौर में हुई स्थिति एवं गति का चित्रण किया हैं। प्रस्तुत उपन्यास भूखमरी, असहायता, बेरोजगारी, नारी पीड़ा प्रस्तुत करता हैं। इस उपन्यास के संदर्भ में डॉ.ज्ञानेश्वर देशमुख कहते है—‘‘ग्लोबल गाँव के देवता में आदिवासी का शोषण महाजन, पूँजीपति, सरकारी कर्मचारी, पुलिस अधिकारी किस प्रकार करते है इसका यथार्थ चित्रण रणेन्द्र ने किया है। देश के कई आदिवासी भयावह गरीबी, भुख, बेरोजगारी, कुपोषण, बीमारी और विस्थापन आदि के शिकार है।’’[२] प्रस्तुत संदर्भ से आदिवासी जीवन की सच्चाई ज्ञात होती है। उनके अस्तित्व की लडाई, बडे कंपनियों द्वारा होनेवाला उनका शोषण आदि का भी विवेचन किया है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक रणेन्द्र आदिवासी जनजीवन का रेखांकन सूक्ष्मता से करते है। ग्लोबलायझन के युग में एक ओर हम विश्व से जुड रहे है तो कहीं पर कुछ गाँव ऐसे भी है जो अपने अस्तित्त्व की लडाई को लेकर लड़ रहे है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक इसी विसंगति का चित्रण करते है।

नवलेखकों की पंक्ति में से ‘रणेन्द्र’ ने ‘ग्लोबल गाँव के देवता’ उपन्यास के माध्यम से ‘असुर समाज’ को यथार्थ प्रस्तुत किया है। भूमंडलीकरण के पहले गाँव का जीवन खुशहाली से भरा हुआ था। पहले मनुष्य समाज केंद्रित था लेकिन आज का मनुष्य अर्थकेंद्रित बन गया है। खेती की अवजारों में विभिन्न परिवर्तन आ चुके है लेकिन असुर समाज के द्वारा बनाए जानेवाले अवजारों का अंत हो गया। इससे इन

लोगों के रोजगार छिन गए, आय का साधन खत्म हो चुका, इन लोगों को आर्थिक विपन्नता के कारण अपनी जमीनें कम दाम में बेचनी पड़ रही है, इन सभी बातों का जिक्र प्रस्तुत उपन्यास के अंतर्गत लेखक ने विस्तार के साथ किया है। भूमंडलीकरण के दौर में पारंपारिक खेती अवजार नामशेष हो चुके। प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से लेखक ने इस व्यथा को लोगों तक पहुँचाया है। यहाँ पर लेखक ने असुर समाज की लोकसंस्कृति, नारी जीवन एवं उनकी त्रासदी, अन्याय, अत्याचार आदि का भी चित्रण किया है। २१वीं सदी तक आते– आते हमारे समाज में कई तरह के बदलाव आ चुके हैं इसके बावजूद भी 'असुर समाज' को आज भी कितनी दयनीय अवस्था में अपना जीवनयापन करना पड़ता है यह स्थिति सोचनीय है।

**बीमारी की समस्या –**

असुर समाज को अपने अस्तित्व की सुरक्षा करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। कई लोगों को अपनी जान गँवानी पड़ती हैं। शिंडाल्को, वेदांग जैसी बड़ी–बड़ी कंपनियाँ उनकी जमीन पर वैध–अवैध खनन करती है, खनन के बाद उन गडढों को भरने का काम नजरअंदाज किया जाता है, इससे सेरेब्रल, मलेरिया आदि बीमारियों से बच्चे तथा बूढे बीमार हो जाते हैं। गाँव में डॉ न होने के कारण जब यह लोग बीमार हो जाते है इसका सही इलाज ना मिलने के कारण कई लोग मृत्यु की चपेट में आते है। इन लोगों की समस्या की ओर ध्यान देने के लिए न तो सरकार के पास समय है और ना ही बड़ी–बड़ी कंपनियों कोयजो कि उनकी ही जमीन से करोड़ों रूपयों का मुनाफा पाते हैं। जब यह लोग अपनी अस्तित्त्व की लड़ाई लढने के लिए संघर्ष करने पर उतारू हो जाते है तो इन्हें पुलिसद्वारा नक्सलवादी ठहराया जाता है और उनकी हत्याएँ की जाती हैं।

उनके अस्तित्त्व पर हमेशा खतरा मँडराता रहता है कभी उन्हें नक्सलवादी करार देकर पुलिसद्वारा मार दिया जाता है तो कई बार उन्हें कंपनियों द्वारा किए गए अवैध खनन के कारण सेरेब्रल, मलेरिया जैसी बीमारियों से सामना करना पड़ता है। कई लोग इस भयानक बीमारियों का शिकार हो जाते हैं।

**व्यवस्थागत विसंगतियां –**

असुर समाज के लोगों को कंपनी तथा सरकार की ओर से झूठे आश्वासन देकर ठग लिया जाता है। असुर समाज का विकास करने के बहाने उन लोगों की जमीनें उनसे छीन ली जाती है तथा असुर समाज के बच्चों के लिए बनाए गए स्कूल में उनके बच्चों को ना ही स्कूल में दाखिला मिलता है और ना ही अच्छी नौकरी। कई असुरों के घर उजाड़कर स्कूल बनावाया जाता है फिर भी उनके बच्चों को वहाँ पढ़ने का मौका नहीं मिल पाता। वहाँ पर छोटी–बड़ी कंपनियाँ बॉक्साइट निकालने के लिए गड्ढे खोद लेती है, उन गड्ढों में बॉक्साइट निकालने के बाद कंपनी वह गड्ढे भरने का काम नहीं करती। कंपनियाँ करोंडों अरबों में मुनाफा कमाती है लेकिन इन लोगों की सेहत की ओर ध्यान नहीं देती। अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए लालचन दा कहते है–''दसअसल असली बात यह है कि ये लोग हम लोगों को आदमी में गिनते ही नहीं हैं। अब तक इन खुले खदानों की बरसाती जमे पानी में पल–बड़कर मच्छरों ने हमारा जीना हराम कर रखा है। हमारे होश में चार दर्जन से ज्यादा नयी उमर के लड़के माथा–बुखार, सेरेब्रल मलेरिया से मरे हैं। बुढे बुजुर्गों की तो गिनती ही नहीं। हमारे दुख से इन्हें क्या, इनको तो बस अपने मुनाफे ये मतलब हैं।''[३]

असुर समाज की महिलाएँ तथा लड़कियाँ भी इससे अछूती नहीं हैं। लेखक का कथन है –''अब तो हालत यह है कि धासी टोले की बेटियाँ ढंग से कपडा–लत्ता पहन ओढ ले तो बबुआनी की लड़कियों पर भारी पड़ती हैं। यही खूबसूरती उनके लिए काल बन गयी। अव्वल तो बबुआनी के लौड़े–लपाडेघ उनकी शादी होने नहीं देते। मुश्किल से शादी हो भी गयी तो दो–चार साल में न जाने क्या उपाय करते है कि घाँसी टोली में परित्यक्ता और विधवा बेटियों की बाढ़–सी आ गयी है। कसाइयों के हाथ में पड़ी गाय–सी ये बेटियाँ बार–बार पेट गिराने से असमय ही बुढा जाती हैं। ये नवयुवती–वृद्धाएँ दुःख विषाद से स्याह चेहरा देह लिए जहाँ से गुजरती हैं, एक उदासी–सी छा जाती हैं।''[४] असुर समाज की महिलाओं तथा लड़कियों को भी कई मुसीबतों का सामना करना पडता है। यहाँ पर महिलाओं के साथ–साथ सामान्य

जनता का यथार्थजीवन चित्रित हुआ है।

### बेरोजगारी की समस्या –

'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास में लेखक ने बेरोजगारी की समस्या पर प्रकाश डाला है। रूमझुम का चरित्र बेरोजगार युवा वर्ग की मानसिकता स्पष्ट करता है। रूमझुम असुर समाज का है। उसने लेखक से दो साल पहले ही अपना ग्रेजुएशन पूरा किया है फिर भी उसे कहीं नौकरी नहीं मिलती। वह बेरोजगारी के कारण शासन व्यवस्था के प्रति अपना आक्रोश व्यक्त करते हुए कहता है—'पिछले दो—तीन वर्षों से कैजुअल शिक्षक के रूप काम करने की इच्छा हैं। लेकिन वहाँ भी दाल नहीं गलती। आखिर हमारी छाया से भी क्यों चिढ़ते हैं ये लोग? माड—भात खिलाकर अधपढ़—अनपढ़ शिक्षकों के भरोसे, फुसलावन स्कूल से हमारे बच्चे, ज्यादा से ज्यादा स्किल्ड लेबर, पिऊन, क्लर्क बनेंगे, और क्या? यही हमारी औकात हैं। हमारी ही छाती पर ताजमहल जैसा स्कूल खड़ा कर हमारी हैसियत समझाना चाहते हैं लोग।''[५] वह बेरोजगारी के कारण शराब के नशे का शिकार हो जाता है। सरकार की ओर से असुर समाज की होनेवाली उपेक्षा का विरोध करता रहता है।

### गरीबी —

'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास में असुर समाज जीवन की त्रासदी का चित्रण आता है। असुर समाज के लोगों पर जब कोई आर्थिक मुसीबत आ जाती है तो उन्हें अपनी जमीन बेचने के सिवा और कोई चारा नहीं रहता। उन्हें वह जमीन भी काफी कम दाम में बेचनी पड़ती है। सोमा के बाबा को अपनी बेटी की लाश को अस्पताल से लाने के लिए कम दाम में अपनी जमीन बेचनी पड़ती है। रूमझुम का वक्तव्य असुर समाज की दीनता चित्रित करता है—''पानी और जलावन जुटाने में ही हमारी औरतों की आधी जिन्दगी गुजर जाती है। बरसात के गिंजन को मत पूछिये। बन्द खदान के सैंकडो गड्ढे विशाल पोखरों में बदल जाते हैं। कीचड़ में लौटते सूअरों और हमारे बच्चों में फर्क करना मुश्किल हो जाता हैं। वहाँ के गेस्ट हाऊस के मेस में छत्तीस तरह के व्यंजन। मुहावरे वाले नहीं, सचमुच के। क्या खाएँ क्या नहीं खाएँ। एक ही दिन में पेट खराब हो गया। वहाँ मकई का घट्टा खा—खाकर जीभ पर घट्टा पड़ जाता हैं। हमारे ज्यादातर घरों में भात—दाल सब्जी पर्व—त्योहार का भोजन हैं।''[६] यहाँ पर असूरों का खान—पान और गेस्ट हाउस के खान पान की तुलना की है। जिसमें काफी विसंगति दिखाई देती है। घाँसी लोगों की आर्थिक स्थिति का वर्णन करते हुए लेखक कहते हैं—'घाँसी बाँस की कारीगरी से आजीविका चलानेवाले दलित लोग हैं। बाद के वन कानूनों और फॉरेस्ट गार्ड के लालच ने बाँस को इतना दुर्लभ—सा बना दिया कि इनकी आमदनी काफी घट गयी। ये लोग कारीगर से भूमिहीन मजूर बनकर रह गये। गरीबी ने हरतरह से दीन—हीन बना दिया।''[७]घाँसी टोली का कारोबार चौपट हो जाता है। इससे उनकी दिन—ब—दिन आर्थिक स्थिति बिगड़ती ही जाती है। गरीबी में ही उन्हें अपना जीवनयापन करना पड़ता है। उनके अपने निजी कारीगिरी खत्म हो जाने के कारण उन्हें शहर में जाकर मजदूरी करने की सिवा और कोई चारा नहीं रहता है। 'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास में लेखक ने असुर समाज की विवशता चित्रित की है। असुर समाज की विवशता उनके विनाश का कारण बन जाती है। रूमझुम का वक्तव्य इस बात की पुष्टि देता है—बीसवीं सदी की हार हमारी असूर जाति की अपने पूरे इतिहास में सबसे बड़ी हार थी। इस बार कथा—कहानी वाले सिंगबोंगा ने नहीं, टाटा जैसी कम्पनियों ने हमारा नाश किया। उनकी फैक्टरियों में बना लोहा, कुदाल, खुरपी, गैंता, खन्ती सुदूर हाटों तक पहुँच गये। हमारे बलाये लोहे के औजारों की पूछ खत्म हो गयी। लोहा गलाने का हजारों हजार साल का हमारा हुनर धीरे—धीरे खत्म हो गया।''[८] यहाँ असुर समाज का हो रहा पतन देखा जा सकता है। लोहे से बने हथियार का हुनर बड़ी कंपनियों के आते चला गया इससे उनका आर्थिक स्रोत भी धीरे—धीरे कम होता गया। इन लोगों को गरीबी का सामना करना पड़ता है।

### नेताओं का अधिपत्य —

'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास नेता द्वारा अपनायी जानेवाली रणनीति का पर्दापाश करता है। यह नेता वर्ग असुर समाज के पक्ष में होने का दावा करते है तो दूसरी ओर बॉक्साइट खदान करनेवाली कंपनियों से भी मेल—जोल बनाए रखते हैं। शिवदास

बाबा तथा विधायक जी असुर समाज के पक्ष में होने का झूठा दिखावा करते है लेकिन इसके पीछे काम करती ओछी राजनीति का चित्रण आया है—‘‘अन्दरूनी बात यह लगती है कि बबवा और विधायक दोनों भितरिया शातिर चीज हैं। ‘वेदांग’ कंपनी की साइनबोर्ड से ही बहुत कुझ सूँघ रहा होगा। कुछ बड़ा गेम जरूर होगा आगे। तभी मुखालफत को सोच रहा है ई लोग।’’[९] यहाँ पर नेताओं की स्वार्थी वृत्ति का परिचय मिलता है।

ग्लोबल गाँव के देवता’ उपन्यास में पुलिस द्वारा अपनाई गई गुंडागर्दी का परिचय आया है। असुर समाज को लोगों की अपनी अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्ष करना पड़ता है, यह लोग पुलिस के अत्याचारों के खिलाफ आंदोलन करते है। असुर समाज के लड़कों को पुलिस की मारपीट का शिकार होना पड़ता है। पुलिस उन लोगों पर फायरिंग करती है, कई लोगों को अपनी जान गँवानी पड़ती है। इस घटना को अंजाम देने के लिए पुलिसवाले इन लोगों को नक्सलवादी ठहरा देते है और उनकी हत्या करते है।

झारखंड में स्थित ‘असुर समाज’ के पूर्वपरंपरागत हथियार बनाने की कला का पतन हो चुका है। साथ ही उनके अस्तित्व पर भी खतरा मंडराता नजर आता है। विवेच्य उपन्यास में लेखक ने असुर समाज का जनजीवन, उनकी पीड़ा,गरीबी, अत्याचार, उनके अस्तित्व की लड़ाई, बड़ी बड़ी कपनियों द्वारा होनेवाला उनका शोषण आदि का विवेचन किया है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने आदिवासी जनजीवन का सूक्ष्मता से रेखांकन किया है।

निष्कर्षत: असुर समाज का जनजीवन तथा उनकी समस्याओं को देखने के बाद आदिवासी जीवन कितना भयावह एवं असुरक्षित है इसे देख सकते है। भारत देश की आजादी के पश्यात भी आज भी ऐसे कई गाँव है जो कि कई समस्याओं का सामना करते हुए नजर हुए अपना जीवनयापन करते है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची —**

१. अरविन्द कुमार उपाध्याय, www-umrjournal-com पृ. ९४

२. डॉ. देशमुख ज्ञानेश्वर, ‘भूमंडलीकरण और हिंदी उपन्यास’, पृ. १५१

३. रणेन्द्र , ग्लोबल गाँव के देवता , पृ. क्र. ६२

४. वही, पृ. क्र. ४९,५०

५. वही, पृ. क्र.१९

६. वही, पृ. क्र.१९

७. वही, पृ. क्र.४९

८. वही, पृ. क्र.८३

९. वही, पृ. क्र.८०

---

35

# सामाजिक उत्तरदायित्व से बेखबर कार्पोरेट जगत

## (‘बाजार’ और ‘नया बैंक’ कविता के विशेष संदर्भ में)

**प्रो. डॉ. सरोज पाटील**
श्री शहाजी छत्रपति महाविद्यालय, कोल्हापुर

**********

**सारांश :**

भूमंडलीकरण ने पूरे विश्व के आर्थिक, सांस्कृतिक ढांचे को परिवर्तित कर दिया है। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में नई आर्थिक नीति, खुला बाजार, प्रौद्योगिकी और तकनीक का विस्फोट, कम्प्युटर, मोबाईल का तीव्र विकास, सार्वजनिक संस्थानों का नीजि संस्थानों में परिवर्तन, प्रबंधन—वितरण की नई पध्दतियां, विज्ञापनवाद और उसके परिणामस्वरुप निर्माण बाजारवाद और उपभोक्तावाद ने मनुष्य जीवन को अंतरबाहय परिवर्तित कर दिया है। भूमंडलीकरण, उपभोक्तावाद ने अब पूरे विश्व में अपनी जडे जमा ली है। कार्पोरेट जगत फलता फुलता जा रहा है। कार्पोरेट गव्हर्नेंस के सिद्धांत खोखले बने हुए हैं। निष्पक्षता, पारदर्शिता, जोखिम प्रबंधन, जिम्मेदारी जवाब देगी आदि कार्पोरेट गवर्नेंस के सिद्धांत धूसर बने हुए हैं। कार्पोरेट जगत अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को नहीं निभा रहा हैं।

बाजारवाद ने अपनी अलग नीति बनाई हुई है। जहां पर सामान्य व्यक्ति को गुमराह बनाने के षड्यंत्र खेले जा रहे हैं। सामान्य व्यक्ति को यह जताया जा रहा हैं की तुम बडी अभावग्रस्त जिंदगी जी रहे हो। बडी सी दुनिया में बहोत सारी ऐसी वस्तुएं, बाते मौजूद है जिनसे तुम अनभिज्ञ हो उन चीजोंकों प्राप्त करना तुम्हारा अधिकार है। तुम चाहो तो हमारी मदत से दुनिया की हर चीज तुम प्राप्त कर सकते हो उसके लिये तुम्हे हमारे साथ चलना होगा।